6. सिंध पर मोहयाल छिब्बर जाति का राज

सिंध के विरुद्ध अरब अभियान

दक्षिण अफ़ग़ानिस्तान में अरबों की असफलता से हताश हो कर हज्जाज ने भारत के एक और सीमावर्ती प्रदेश सिंध की और ध्यान केंद्रित किया. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने अपनी पुस्तक *ह्यूमैनिटी ऐट डैथस डोर* और मौलाना नादवी ने *इंडो-अरब रिलेशन्ज़* में लिखा है की 638 और 711 के बीच अरबों ने सिंध पर पन्द्रह आक्रमण किये. "*चचनामा*" में इनका विवरण उपलब्ध है.

प्रारंभिक धावे थाना (मुंबई के निकट), ब्रोच और देवल (कराची के निकट) खलीफा उमर के समय (634-43) में ही समुद्री मार्ग से हुए. इसके पश्चात कम से कम छह अभियान दर्रा बोलन और क्वेटा से स्थल मार्ग से थे. यह खलीफा अली (655-60) और मुआविया (661-79) के कार्यकाल में थे. आक्रमकों और खलीफा शासकों के लिये भारत जैसे अमीर देश पर छापे मारना बड़ा आकर्षक था क्योंकि लूट का पांचवां भाग राज्य को मिलता था और शेष सैनिकों में वितरित कर दिया जाता था. इन अभियानों द्वारा असुविधाजनक तत्व भी देश से दूर रखे जा सकते थे. भूमि पर कब्ज़ा न कर पाने पर भी इन दलों के नेता प्रायः धन और गुलाम (बंदी) ले कर आते थे. परन्तु बहुदा वह मारे भी जाते थे. सिंध के इस पर्वतीय क्षेत्र की वीर जनता ने अपनी भूमि पर विदेशी राज्य कभी नहीं स्थापित होने दिया.

जब अफ़ग़ानिस्तान में पराजय के पश्चात हज्जाज मुस्लिम प्रतिष्ठा बचाने में पूरी तरह असफल रहा तो उस ने उबैदुल्ला बिन नाभन को देवल पर आक्रमण करने के लिये भेजा परन्तु वहां पर सेना नायक समेत सब मुसलमानों का वध कर दिया गया. उसने उम्मान के हाकिम बुदैल (या बाज़िल) को एक बड़ी सेना देकर देवल पर पुनः आक्रमण का आदेश दिया. देवल के लोगों ने **सिंध के ब्राह्मण राजा डाहर** को एक संदेशवाहक भेज कर सूचित किया कि बुदैल निरून नगर तक पहुंच गया था. डाहर ने अपने ज्येष्ठ पुत्र जयसिंह को उष्टारोही (ऊँट पर सवार) और अश्वारोही 4000 सैनिक देकर शीघ्रता से देवल की ओर भेजा. घमासान युद्ध हुआ और अंत में अरब सेना पराजित हुई. बुदैल मारा गया और बहुत से मुसलमान बन्दी बना लिये गये. हज्जाज को इससे बहुत दुःख हुआ और उसने इस अपमानजनक आपदा का बदला लेने का प्रण किया. उसने बड़ी सावधानी से उत्कृष्ट सैनिकों का चयन कर के प्रचुर सामरिक सामग्री और यंत्रों से सुसज्जित एक विशाल सेना का गठन किया. अपने दामाद मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में समुद्र और स्थल मार्गों से इनको देवल भेजा. इसके लिये हज्जाज ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी. जाते समय उसने मुहम्मद को कहा "अल्लाह की कसम खाता हुँ कि ईराक में मेरे पास जितनी सम्पत्ति है और साधन हैं सब इस मुहिम पर लगा दूँगा. जब तक बुदैल के वध का बदला नहीं लिया जाता तब तक मेरे दिल की आग ठंडी नहीं होगी".

अरबों को कई बार पराजित कर चुके (जिन में से दो झढ़पें तो ताज़ा थीं) डाहर ने इस अभियान को भी सहजता से लिया. उस के लिए यह केवल शौर्य और सम्मान की प्रतिस्पर्धा मात्र थी. उसके विरोधियों द्वारा लिखित वृतांत से यही मत उभर कर आता है. (*चचनामा*)

यह राजा डाहर कौन था? उसका राजवंश कब से सिंध पर राज कर रहा था? और इस संघर्ष का अंत क्या हुआ? मोहयाल इतिहास (*गुलशने मोह्यालीं*) के अनुसार **छिब्बर जाति के एक पूर्वज** नरसिंहदेव, मथुरा में एक प्रतिष्ठित पद पर आसीन थे. हालात बिगड़ने पर उनका परिवार एक कारवां के साथ सिंध की राजधानी अलोर पहुंचा. नरसिंहदेव के दो बेटे थे – छाज और चन्द्र. (इससे आगे का सब वृत्तांत मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा लिखित *चचनामा* पुस्तक से है जो उस समय के सिंध के इतिहास का मुख्य स्रोत है.) छाज को सिंध राज्य के मंत्री के कार्यालय में नौकरी मिल गई और उसके कार्यकौशल से प्रसन्न होकर मंत्री के निधन पर उसे मंत्री (वज़ीर) नियुक्त कर दिया गया. लम्बी बीमारी के पश्चात राजा का भी स्वर्गवास हो गया और उसकी रानी 'सुहंदी' को चिंता हुई कि उसके पति के भाई सिंध राज्य पर अधिकार जमा लेंगे. भाग्यलक्ष्मी के आशीर्वाद और रानी सुहंदी की चाल से 632 ई में छाज, सिंध के सिंहासन पर सुशोभित कर दिए गये और मंत्रीगण द्वारा रानी सुहंदी से उनका विवाह कर दिया गया.

मंत्री के पद के समान ही छाज ने राज्योचित दायित्व भी सुचारु रूप से निभाया. कश्मीर से लेकर ईरान तक अपनी सीमाँयें सुनिश्चित कीं और राज्य के हर क्षेत्र में अपने अधीनस्थ गवर्नर, सामंत आदि नियुक्त किये. छाज ने 40 वर्ष तक राज्य किया. उसके पश्चात आठ वर्ष (671-679 ई) उसके भाई चन्द्र ने राज किया. चन्द्र के निधन पर 679 ई में छाज का बेटा डाहर अभिषक्त हुआ. उसके लम्बे शासन में भी शान्ति और समृद्धि का वर्चस्व रहा. जैसे कि बताया जा चुका है, अफ़ग़ानिस्तान में पराजय से हताश होकर अरब ख़लीफ़ा की ओर से सिंध पर दो आक्रमण किये गए जो असफल रहे. इराक के गवर्नर – हज्जाज – ने अपने पूरे संसाधन जुटा कर एक भारी सेना प्रचुर युद्ध सामग्री से लैस करके जल और थल के मार्ग से 712 ई में देबाल भेजी.

जयसिंह ने मकरान की ओर से आ रही अरब सेना की सूचना अपने पिता राजा डाहर को दी और देबाल जाकर युद्ध करने की आज्ञा माँगी पर उसे मना कर दिया गया. जल और थल मार्गों से आ रही सेना और युद्ध यंत्र देबाल पहुंच गये तो युद्ध आरम्भ हो गया. वहां का दुर्ग जीत लिया गया. जनता की क्षमा याचना पर भी किसी पर दया नहीं की गई और अरब

सैनिक तीन दिन तक नरसंहार करते रहे. स्त्रियों समेत सब को दास बना लिया गया. अरब पद्धति के अनुसार पांचवां भाग खलीफा के लिए भेज कर शेष सैनिकों में बाँट दिया. समुद्र तट से अरब सेना आगे बढ़ी. देश के इस भाग में जनता और राजा डाहर के कुछ अधीनस्थ शासक, बौद्ध थे. उन्होंने पहले ही खलीफा से सांठ गांठ की हुई थी. नेरून, स्विस्तान और ससन के दुर्ग सुगमता से अरबों को मिल गये. अरब सेना ने सिंध नदी पार करके ऊपर की ओर प्रस्थान किया.

कुछ समय पहले ही अरब आक्रमणकारी दो बार हार चुके थे और राजा डाहर का मनोबल बहुत ऊंचा था, पर उसने इस समय की सामरिक स्थिति को शायद ठीक से नहीं समझा. मुस्लिम सेना की आरम्भिक सफलता के कारण कई अग्रणी सामंत गुप्त या परोक्ष रूप से अरब सेना नायक से मिल गये थे. अरब सेना 50 दिन तक रावड़ दुर्ग के समीप राजा डाहर की सेना के सामने, नदी के पार, अकर्मण्यता से पड़ी रही पर युद्ध करने का साहस नहीं हुआ. उनमें खाने की कमी और बीमारी फैलने पर भी राजा डाहर ने आक्रमण कर के लाभ उठाना मर्यादा संगत नहीं समझा. उनका मनोबल बढ़ाने के लिए अरब से 2000 घोड़े और कुछ सामग्री भेजी गई.

अंततः घमासान युद्ध हुआ. राजा डाहर एक हाथी पर बैठ कर अपनी सेना का नेतृत्व करता हुआ बड़ी वीरता से लड़ा जबकि एक समय अरब सैनिक तथा उनका सेनानायक त्रस्त थे (इस प्रकार का वर्णन *चचनामा* में है). एक आग के गोले से डाहर के हाथी के हौदे में आग लग गई और उस हलचल में उस का वध हो गया.

इस के बाद का इतिहास बड़ा विचित्र है. देश के राजा के निधन और पराजय के पश्चात प्रायः संघर्ष समाप्त हो जाता है. परन्तु अरब सेना को अब पहले से भी अधिक कठिनाई हुई. ब्राह्मनाबाद का दुर्ग जयसिंह के पास था. वहां अरब सेना छह महीने तक घेरा डाल कर युद्ध करती रही. इस बीच जयसिंह, जयपुर और कश्मीर सहायता के लिए गया परन्तु सफल नहीं हुआ. राजधानी अलोर का दुर्ग डाहर के दूसरे बेटे के नियंत्रण में था. वहां पर भी अरबों को "कई महीनों तक" घेरा डालना पड़ा जब तक कि यह राजकुमार दुर्ग छोड़ कर चला नहीं गया. इसी प्रकार अस्कलंदा, सिक्का और मुलतान के दुर्ग जीतने में अरब सेना को कड़े प्रतिरोध और खाद्य समग्री की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा.

जयसिंह, पत्रों द्वारा बाकी राजकुमारों के सम्पर्क में रहा जो अन्य दुर्गों के गवर्नर थे और उन्हें अपने निर्दिष्ट कर्तव्य करते रहने के लिए प्रोत्साहित करता रहा. युद्ध समाप्त हो जाने पर (जयपुर के समीप) नजूल संदल गाँव में सब भाई एकत्रित हो गये.

अरब सेनानायक मुहम्मद बिन कासिम को वापस बुला लिया गया. उसके पश्चात जयसिंह ने ब्राह्मनाबाद और अन्य कई हिन्दू सामंतों ने अपने क्षेत्र जीत लिये और अरबों को पुनः सिंध जीतना पड़ा. *चचनामा* का वृत्तांत यहां समाप्त करते हैं.

मुलतान से आगे पंजाब पर अरबों का नियंत्रण नहीं था. मोहयाल इतिहास के अनुसार, सिंध हाथ से निकल जाने के पश्चात डाहर के पुत्र जयसिंह ने भद्रावली (पुराना भेरा), नारायण ने पठानकोट तथा भवन और झाम ने भटनेर में अपने राज्य स्थापित कर लिये. अनुमानतः तीन कोनों पर स्थित इन तीन राजधानियों से सब भाई मिलकर पंजाब पर शासन कर रहे थे. यह राज्य छिब्बरों से वैद शासकों के हाथ कब आया इसकी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है.

यह कहना कि राजा छछ अपने नाम के साथ "छिब्बर" लिखता था पूर्णतया निराधार है और ऐतिहासिक लेखों में इसका कोई प्रमाण नहीं है. वैसे भी छछ के नाम के साथ छिब्बर जोड़ना ऐतिहासिक असंगति होगी क्योंकि उसके जीवन कल में यह परम्परा नहीं थी. इस वृतांत में कई स्थानों पर हम छछ/भीमदेव/जयपाल या उनके राजवंशों को छिब्बर/दत्त/वैद कहें गे. यहां पर यह स्पष्ट करना आवश्यक है के यह छूट इस लिए ली गई है के बार बार "छिब्बर/ दत्त/ वैद के पूर्वज" न लिखना पड़े.